श्री पमहोपमअिंस्म साहिब में भगत कबीर की पमहोलममअममत

डॉ0 बृजबाला सिंह

'पमहोपमअिंस्म साहिब' पहली जानी–मानी पुस्तक है, जो पमहो परम्परा को स्थापित भी करती है और समाप्त भी करती है। ग्रन्थ के दस पमहोक्ममेइ में प्रायः सभी बिना नाम दिये नानक के नाम पर अपनी रचनाएँ लिखते हैं। पमहोपमअिंस्म साहिब के रूप में स्थापित होते है। दसवें पमहो गोविन्द सिंह दशम् ग्रन्थ के बराबर है। पमहोीमव को महिला मंडित करने, पमहो द्वारा संस्कृति का विकास करने, शिष्य नहीं सिख पन्थ खड़ा करने, कविता के लिए ही मंदिर साहब, सर, अमृतसर और विशेष वेश में वस्त्रधारी पमहोश्रममब्ममत के पाठक, संरक्षक, ग्रन्थी और पंथी तैयार करने का उन्होंने यत्न किया। यह उनका मत था कि पमहोक्ममेइ के शब्द की पूजा हो। उसी के लिए आरती, कड़ा प्रसाद और अमृत छकने की संघर्षशील प्रतिज्ञाएँ है, जो जाति, वर्ण, छुआछूत जैसी परम्परा विरोधी चिंतक एक संगठित जाति को सैनिक–धर्म से जोड़ती हैं। इसके साथ यह भी हुआ कि उनके पुत्र श्री चन्द्र ने अपना 'उदासी पंथ' अलग से खड़ा कर लिया। इस पूरी प्रक्रिया को ग्रन्थ के चार सौ से अधिक साल पूरे होने पर आज के संदर्भ में समझने की आवश्यकता है। सिख परिकल्पना धर्म नहीं है, पंथ है। पमहोअममअमामह्न ने जो पंथ चलाया था, वही सिक्ख पंथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तत्कालीन संत विचारधारा के अनुसार नानक भी निराकारवादी थे। वे अवतारवाद, जात–पांत और मूर्तिपूजा को नहीं मानते थे। उनका मत एक ओर वेदान्त पर आधारित है, वहीं दूसरी ओर तसव्वुफ के भी अनेक लक्षण उसमें है। विशेषतः पमहोअममअमामह्न की उपासना के चारों अंगों (सरन–खंड, ज्ञान–खंड, करम–खंड, तथा सच–खंड) सूफियों के चार मुकामात (शरीअत, मारफत, उकबा और लाहूत) से निकले हैं, ऐसा विद्वानों का विचार है।